नाम: डॉ० सुजाता गुप्ता
विभाग: हिंदी
वर्ग: इन्टरमीडिएट XII
अंक: 100
शीर्षक: 'तिरिछ' कहानी का सारांश
लेखक: उदय प्रकाश

'तिरिछ' कहानी का सारांश।

पारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार पर रचित एक साधारण, परंतु आकर्षित करता शिल्प इस कहानी की विशेषता है। 'तिरिछ' कहानी पिता और पुत्र के आपसी संबंधों और इसे बेहद ही आकर्षक रूप से कहा गया है। यह कहानी एक पुत्र के द्वारा अपने पिता के लिए कही गयी है। अपने सामान्य भारतीय पिता-पुत्र संबंधों में 'तिरिछ' विद्रूपताओं के रूप में आया है। कहानी के प्रारंभ में ही लेखक लिखते हैं, "इस घटना का संबंध पिताजी से है। मेरे सपने से है और शहर से भी है। शहर के प्रति जो जन्मजात भय होता है, उससे भी है।" इस कहानी में तिरिछ पिताजी को काटता है, जिसे वे मार तो देते हैं, परंतु जला नहीं पाते। फिर वे शहर चले जाते हैं। 'तिरिछ' को लेकर गाँवों में अनेक प्रकार की लोककथाएँ प्रचलित हैं, इन्हीं विश्वासों को लेखक ने अपनी इस कहानी में गंभीरता से प्रस्तुत किया है। जिसके जहर से लोगों की मृत्यु तक हो जाती है। मगर यह 'तिरिछ' विभिन्न रूपों में नजर आया है, जो गाँव से लेकर शहर तक पिताजी का पीछा करता है और अंततः पिताजी की मृत्यु का कारण भी बनता है। यह तिरिछ अदालती सम्मन, अपमान, तिरस्कार, शहरी लोगों के व्यवहार और अपूर्ण ज्ञान का है। शहर आने के बाद लेखक के पिता के साथ जो कुछ भी घटित होता है, वह अत्यंत ही मर्मस्पर्शी है। कथानायक अपने सपने में बार-बार तिरिछ को देखता है। घर पर जो सबसे मजबूत व्यक्ति वह शहर आकर अपनी दयनीयता पर तरस कर रहा था। शहरी जीवन की विद्रूपताएँ और संवेदनहीनता का जहर धीरे-धीरे उन्हें निगल रहा

Scanned with CamScanner

था। घर को खो देने का भय और अदालतों में मिला अपमान उनकी तबाही को बता रही थी। कोई उनकी मदद नहीं कर रहा था, बल्कि उन्हें प्रताड़ित कर रहे थे। धतूरे के बीज का काढ़ा बनाकर, बिना किसी चिकित्सकीय परामर्श के उन्हें पिला दिया गया। जिससे उनकी चेतना चली गयी और वे विक्षिप्त से हो गए। तिरिक के काटे जाने के कई घंटों के बाद भी जो व्यक्ति ठीक-ठाक था, वह अचेतन-सा हो गया। फिर शहर और अदालतः के फेरों ने एक सम्मानित ग्रामीण-व्यक्ति को अपमान और वितृष्णा से भर दिया। ये सभी तिरिक के ही भिन्न-भिन्न रूप हैं, जिसके काटने से व्यक्ति अचेत एवं निष्क्रिय हो जाता है। आगे की कहानी में शहर में जगह-जगह पर मिली प्रताड़ना की वजह से वे विक्षिप्त हो रास्ता भटक जाते हैं और अन्ततः मारे जाते हैं।

कहानी के अंत में पिताजी का विकृत चेहरा, समाज के विकृत रूप का प्रतिनिधि है। गाँवों का आज जिस प्रकार शहरों में रूपांतरण हो रहा है और सभी तिरिक, विसंगतियाँ, विद्रूपताओं में परिवर्तित होकर शहरों में फैल गए हैं, वे वास्तव में शहरातियों का जंगलीपन ही है। यहाँ के लोग तिरिक से भी अधिक विषैले और खतरनाक हैं। कहानी के अंत में लेखक कहते हैं कि असली तिरिक जंगल से निकलकर शहर में आ गया है और वह कई रूपों में भी फैल गया है।

Scanned with CamScanner